© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Science and Technology

उच्च शिक्षा स्तर पर प्रतिभाशाली छात्रों के नैतिक निर्णय का अध्ययन

डॉ0 धर्मेन्द्र शुक्ल
शोध–निर्देशक,
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा संकाय, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद,उत्तर प्रदेश, भारत।

कंचन शुक्ला
शोधछात्रा,
शिक्षाशास्त्र, शिक्षक–शिक्षा संकाय, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद,उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन उच्च शिक्षा स्तर पर प्रतिभाशाली छात्रों के नैतिक निर्णय का अध्ययन है। इस अध्ययन के उद्देश्य में उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् उच्च शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में परास्नातक स्तर के 200 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में रखा जायेगा जिसमें 100 शहरी एवं 100 ग्रामीण छात्र–छात्राओं को रखा गया है। स्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय को मापने के लिए कु0 रंजना गुप्ता, गृह विज्ञान विभाग, अग्रसेन कन्या महाविद्यालय, वाराणसी द्वारा निर्मित है। जो मनोविज्ञान प्रयोग से मानकीकृत है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय में अन्तर है अर्थात् उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। ग्रामीण स्तर पर विद्यार्थियों एवं छात्रों के नैतिक निर्णय अधिक पाया जाना इस बात को इंगित करता है कि ग्रामीण क्षेत्र में जहाँ सामाजिकता अधिक होती है वहीं नैतिकता झलकती है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में नैतिक व्यवहार का विशेष स्थान होता है।

की–वर्ड– उच्च शिक्षा स्तर, प्रतिभाशाली, छात्र–छात्राएँ, नैतिक निर्णय भूमिका

शिक्षा का तात्पर्य मात्र किसी विषय–विशेष का ज्ञान प्रदान करना, अथवा विद्यार्थियों बौद्धिक विकास करना ही नहीं है। उसका गुरुतर दायित्व है। युवाओं के व्यक्तित्व का समन्वित विकास करना ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें,

अपने समाज कृति से जुड़े सकें और उत्कृष्ट मानव बनने की प्रेरणा ले सकें। ऐसे उत्कृष्ट और समन्वित व्यक्तित्व के आधार पर ही समस्त सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय प्रगति संभव होती है।

उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों में भी ईमानदारी, सत्य–वादिता, वचन–बद्धता, न्याय–प्रियता, सरलता, निरहंकारिता, परार्थ–प्रवृत्ति आदि चारित्रिक सद्गुणों का प्रायः अभाव ही देखा जाता है। आज चरित्रवान नहीं 'चतुर' व्यक्तियों का बाहुल्य हो रहा है। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज की प्रचलित शब्दावली में सच्चरित्र, मूल्यनिष्ठा व्यक्तियों को 'अव्यवहारिक', 'मूर्ख' या 'बिचारे' शब्द से सम्बोधित किया जाता है।

नैतिकता का महत्व क सामाजिक जीवन में है। एक अच्छा, मानवोचित समाज बनाने के लिए आवश्यक है कि उसके सदस्यों की, विशेषतः समाज संचालन में अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले उच्च शिक्षा प्राप्त वर्ग की, सामाजिक–नैतिक चेतना सुविकसित हो। इस चेतना के अभाव में आज का शिक्षित वर्ग अपने अधिकारों की बात अधिक करता है, अपने कर्त्तव्यों की कम। उसका ध्यान इस पर अधिक होता है कि समाज को उसे क्या देना चाहिए, इस बात पर नहीं कि उसे समाज को क्या देना चाहिए। नैतिक चेतना हमें अपने सामाजिक और नागरिक दायित्वों और कर्त्तव्यों का बोध कराती है और उन्हें उत्साहपूर्वक निभाने की प्रेरणा देती है। ऐसी भावना से प्रेरित व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र में अथवा सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक जीवन में प्राप्त स्थान को मात्र आजीविका का या अपना प्रभुत्व स्थापित करने का साधन नहीं मानते, बल्कि उसे अपने ज्ञान और कौशल द्वारा समाज के उत्थान में अपना योगदान देने का अवसर मानते हैं। इस सामाजिक–नैतिक चेतना का विकास करना उच्च शिक्षा का प्रमुख दायित्व होना चाहिए। अनुशासन को विकसित करने का प्रथम दायित्व माता–पिता का है। उसके बाद विद्यालय का बनता है। विद्यालय में ही बालक पूर्णता प्राप्त कर लेता है। इसी कारण शिक्षा जगत् में मील का पत्थर कही जाने वाली कोठारी रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया है– ''भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है।'' इससे शिक्षा में नैतिकता एवं सामाजिकता के महत्त्व का अनुमान लगा सकते हैं। विद्यालय में नैतिकता का पाठ नही पढ़ाया गया तो बालक–बालिका को समाज में भी नैतिकता सीखना कठिन होता है।

इस संदर्भ में विचारणीय है कि मनुष्य स्वभावतः पशु के रूप में जन्म लेता है। मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों एवं पशु की मूल प्रवृत्तियों में बहुत अन्तर नहीं है। मानव नैतिकता द्वारा ही पाशविक प्रवृत्ति से मानवीय प्रवृत्ति की ओर मुड़ता है। इस कारण नैतिकता की पूरी उपयोगिता है। ऐसा नही है कि हमारे देश की सरकार नैतिकता एवं सामाजिकता की ओर ध्यान नहीं दिया है। अतः इसी सन्दर्भ में अध्ययनकर्त्री द्वारा यह अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

समस्या कथन–

उच्च शिक्षा स्तर पर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य–

- उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

- उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् उच्च शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में परास्नातक स्तर के 200 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में रखा जायेगा जिसमें 100 शहरी एवं 100 ग्रामीण छात्र–छात्राओं को रखा गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय को मापने के लिए कु0 रंजना गुप्ता, गृह विज्ञान विभाग, अग्रसेन कन्या महाविद्यालय, वाराणसी द्वारा निर्मित है। जो मनोविज्ञान प्रयोग से मानकीकृत है।

सांख्यिकी विधियाँ

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

उद्देश्य–1 **उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन करना।**

H_1 – उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय के मध्य सार्थक अन्तर है।

H_{01}– उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 1

उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

क्र0 सं0	क्षेत्र	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1~M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	क्रान्तिक अनुपात **(C.R. Value)**	**परिणाम**
1	शहरी	100	80.92	8.17	2.91	1.12	2.59	सार्थक < 0.05(1.98)
2	ग्रामीण	100	83.83	7.59				

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय पर प्राप्त प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 80.92 तथा 83.83 है तथा दोनों वर्गों का मानक विचलन क्रमशः 8.17 तथा 7.59 है। जिसकी मानक त्रुटि 1.12 है। दोनों समूह के परिगणित क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान 2.59 है जो .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिये दिये गये सारणी मान 1.98 से अधिक है। अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर सार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि .05 सार्थकता स्तर पर उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय में सार्थक अन्तर है अर्थात् उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय में असमानता पायी गयी।

उद्देश्य–2 **उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन करना।**

H_2 – उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय के मध्य सार्थक अन्तर है।

H_{02}– उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 2

उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

क्र0 सं0	क्षेत्र	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1~M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	क्रान्तिक अनुपात **(C.R. Value)**	**परिणाम**
1	शहरी	50	80.04	8.26	4.32	1.52	2.84	सार्थक < 0.05(1.98)
2	ग्रामीण	50	84.36	6.92				

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय पर प्राप्त प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 80.04 तथा 84.36 है तथा दोनों वर्गों का मानक विचलन क्रमशः 8.26 तथा 6.92 है। जिसकी मानक त्रुटि 1.52 है। दोनों समूह के परिगणित क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान 2.85 है जो .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिये दिये गये सारणी मान 1.98 से अधिक है। अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर सार्थक है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि .05 सार्थकता स्तर पर उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय में सार्थक अन्तर है अर्थात् उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय में असमानता पायी गयी।

उद्देश्य–3 उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_3 – उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय के मध्य सार्थक अन्तर है।

H_{03}– उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 3

उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

क्र0 सं0	क्षेत्र	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1~M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	क्रान्तिक अनुपात **(C.R. Value)**	**परिणाम**
1	शहरी	50	81.80	8.06	1.50	1.63	0.92	असार्थक < 0.05(1.98)
2	ग्रामीण	50	83.30	8.25				

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय पर प्राप्त प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 81.80 तथा 83.30 है तथा दोनों वर्गों का मानक विचलन क्रमशः 8.06 तथा 8.25 है। जिसकी मानक त्रुटि 1.63 है। दोनों समूह के परिगणित क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान 0.92 है जो .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिये दिये गये सारणी मान 1.98 से कम है। अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा शोध परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि .05 सार्थकता स्तर पर उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय में समानता पायी गयी।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय में अन्तर है अर्थात् उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।
- उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय में अन्तर है अर्थात् अर्थात् उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली ग्रामीण छात्रों के नैतिक निर्णय शहरी छात्रों की अपेक्षा उच्च है।
- उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय में अन्तर नहीं है अर्थात् उच्च शिक्षा स्तर के प्रतिभाशाली शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की नैतिक निर्णय में समानता पायी गयी।

ग्रामीण स्तर पर विद्यार्थियों एवं छात्रों के नैतिक निर्णय अधिक पाया जाना इस बात को इंगित करता है कि ग्रामीण क्षेत्र में जहाँ सामाजिकता अधिक होती है वहीं नैतिकता झलकती है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में नैतिक व्यवहार का विशेष स्थान होता है। नैतिक एवं सामाजिक व्यवहार मानव के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। व्यक्ति के व्यवहार में नैतिक एवं सामाजिक व्यवहार प्रेरणा का कार्य करते हैं तथा किसी के जीवन को लक्ष्य का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। **किन्स गिलमैन्स (2007)** ने निष्कर्ष में पाया कि नैतिकता हमारे समाज के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति आवश्यकता तथा उसके कष्ट में इस प्रकार से सहायक सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार नैतिक चेतना, सामाजिक बधंनों को सुदृढ़ करने में सहायक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शर्मा, ए0 एवं अग्रवाल, बी0एल0 (2002) सोसियोमेट्री : ए हैण्डबुक फॉर टीचर्स एण्ड काउंसेलर्स, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।
- देवी, एम.आई. (2002), ''एन इवैल्यूशन ऑफ द रिलाईजेशन ऑफ मोरल, सेक्यूलर एण्ड डेमोक्रेटिक वैल्यूज इन द टैक्टबुक कान्टेण्ट इन तेलगू लैंग्वेज एट प्राइमरी एण्ड सेकेण्डरी स्कूल लेविल्स इन आन्ध्राप्रदेश'', इण्डियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्ट, जनवरी 2004
- नन्दा, पी0 एण्ड पान्नू, जी0 (2005) : इमोशनल स्टेबिलिटी एण्ड सोसियो–पर्सनल फैक्टर्स; इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजूकेशन।
- **किन्स गिलमैन्स (2007).** नैतिक और सामाजिक चेतना के विभिन्न पक्षों का मेटा एनालिसिस, अतिरिक्तांक, प्रतियोगिता दर्पण–(2011) हिन्दी मासिक राष्ट्रीय पत्रिका उपकार प्रकाशन, आगरा पृ0सं0 101
- **यादव, सत्य प्रकाश (2010),** उच्च शिक्षा स्तर पर व्यावसायिक तथा सामान्य पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण मूल्य एवं सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबादः नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
- सरोज, आनन्द (2010). लखनऊ शहर के माध्यमिक विद्यालयों के सामाजिक दबाव और विद्यालयी उपलब्धि का अध्ययन, इण्डियन जर्नल ऑफ एजूकेशन रिसर्च, वाल्यूम 22(1) जनवरी–जून 2011
- मिश्र, मनीष (2011), स्नातक स्तर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी के भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबादः नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
- कुमुद, त्रिपाठी (2011). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावः एक अध्ययन, *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका*, लखनऊ।
- श्रीवास्तव, मयंक कुमार (2011). ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, *भारतीय शोध–पत्रिका,* वाल्यूम –29(1). जनवरी–जून 2011।